BA Part-II

History Notes

By- Dr. Durga Bhawani

BA II   लार्ड विलियम बैंटिंक History (Sub)

लार्ड विलियम बैंटिंक 1828 में भारत का गवर्नर जनरल बन कर आया। वह उदार विचारों का पोषक था। इस समय तक भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का काफी विस्तार हो चुका था। साम्राज्यवादी नीति का स्थान सुधारवादी नीति ने ले लिया था। लार्ड विलियम बैंटिंक ने अनेक सुधार कार्य किए जो निम्नलिखित है —

1. आर्थिक सुधार
2. सामाजिक सुधार
3. शासन संबंधी सुधार
4. शिक्षा संबंधी सुधार
5. सार्वजनिक सुधार

(1) आर्थिक सुधार — हस्तक्षेप और अह नीति ने कोष को रिक्त कर डाला था, अतः बैंटिंक ने बजट को संतुलित करने, कम्पनी की आर्थिक स्थिति को उन्नत करने एवं व्यर्थ के खर्चों को कम करने के लिए निम्न उपायों को अपनाया।

सर्व प्रथम सैनिक भत्ते कम कर दी और सैनिक खर्च

असैनिक दोनों प्रकार के कर्मचारियों के भत्ते में कमी कर दी। इस कटौती से कर्मचारियों में असंतोष फैला किन्तु कम्पनी को इससे बचत हुआ। ~~कार्नवालिस~~ कार्नवालिस ने उच्च पदों का द्वार भारतीयों के लिए बंद कर दिया था लेकिन बैंटिंक ने भारतीयों की नियुक्ति उच्च पदों पर करनी शुरू कर दी। इसे कम वेतन दिया जाता था जिससे भी बचत हुई दौरा एवं अपील की अदालतों को खर्च अधिक होता था। अतः बैंटिंक ने इन अदालतों को समाप्त कर दिया।

मध्य भारत में अफीम की काफी खेती ~~होती~~ होती थी- जिस की चीन तथा पूर्व के अन्य देशों में बहुत माँग थी किन्तु बैंटिंक ने मध्य भारत से सीधे बम्बई ले जाने की व्यवस्था कर दी और व्यापारियों को इसके लिए लाइसेंस दी गई कराँची के स्थान पर बम्बई से अफीम का निर्यात शुरू हो गया जिससे व्यापार का लाभ सिंध के अमीरों के स्थान पर कम्पनी को मिलने लगा। हिन्दू तथा मुसलमान शासकों ने बहुत सारे लोगों को ~~माफी~~ माफी की जमीन दे रखी थी। यह भूमि कर मुक्त थी। बैंटिंक ने इस कर मुक्त जमीन को ले लिया जिससे कम्पनी को 30 लाख रुपये की वृद्धि हो गयी।

लगान को सुव्यवस्थित कर दे
ने सरकारी आय को बढ़ा दिया। बकाया
लगान की वसूली की गई। जो भूमि
बिना लगान की थी उस पर लगान लगा
गई। मद्रास में रैयतवारी और आगरा
तीस वर्ष का प्रबन्ध कर सरकारी आय
वृद्धि की गई।

② सामाजिक सुधार — लार्ड विलियम बैंटि
ने सर्व प्रथम प्राचीन काल
से चली आ रही सती-प्रथा का उन्मू
किया। यह प्रथा अत्यन्त ही भयावह और
हृदय विदारक बन गई थी। सबसे पहले
मुगल सम्राट अकबर ने इस प्रथा को
करने का प्रयास किया था किन्तु अभी
तक किसी ने इसे गैर-कानूनी घोषित न
किया था। राजा राम मोहन राय ने इस
प्रथा के खिलाफ आन्दोलन चलाया। बैं
ने 1829 में इसे गैरकानूनी घोषित क
नियम पारित कर दिया। शुरु में तो कुछ
कट्टर हिन्दुओं ने इसका विरोध किया कि
अधिकांश शिक्षित लोगों ने इसका स्वागत
किया। उन दिनों उत्तरी भारत में ठगों का
आतंक छाया हुआ था। ये लोग जंगल
सड़कों तथा सुनसान स्थानों पर दल बन
छुपे रहते थे और जब कोई व्यक्ति
जाता तो उन्हें लूट लेते तथा गला घों
कर उसकी हत्या कर डालते थे। बैंटि
इसके दमन के लिए सेना को तैनात
दिया जो इन ठगों को चारों तरफ।

से चौर का मार दिया कुछ को गिरफ्तार किया तथा कुछ ने तो आत्म-समर्पण कर दिया तथा इसके नेताओं को फांसी दे दी गई।
बैंटिंक ने इनकी सुधार के लिए शिक्षा तथा व्यापार की व्यवस्था भी करवाई।

भारत के कुछ भागों में विशेष कर मद्रास और उड़ीसा में नर-बलि की प्रथा प्रचलित थी। बैंटिंक ने नियम बना कर इस प्रथा का निषेध कर दिया। बाल हत्या को भी इन्होंने अमानुषिक कार्य बता कर इसका भी अन्त किया। आर्थिक कठिनाई के कारण लोग अपने बच्चे को बेच दिया करते थे और खरीदने वाला उसे दास ~~लोग~~ बना लेता था किन्तु बैंटिंक ने इस प्रथा का भी अन्त किया।

हिन्दू नियम के अनुसार जो हिन्दू अपना धर्म-त्याग देता था वह अपनी पैतृक सम्पत्ति से वंचित हो जाता था। बैंटिंक ने कहा कि जो ईसाई धर्म को अपनाएगा उसे भी उत्तराधिकार और सम्पत्ति से वंचित नहीं होना पड़ेगा किन्तु जो हिन्दू या मुसलमान है उन्हें उसी के धर्म का अनुयायी होना अनिवार्य है।

बैंटिंक ने 1835 में प्रेस पर से प्रतिबंध हटा दिया और प्रेस की स्वतंत्रता घोषित कर दी।

P.T.O.

(3) शासन-संबन्धी सुधार — कार्नवालिस के बाद किसी भी शासक ने शासन सम्बन्धी सुधार नहीं किए। बेंटिंक ने भारतीयों की नियुक्ति के सम्बन्ध में कार्नवालिस की नीति को बदल दिया अब बेंटिंक ने भारतीयों को नौकरी देना आरंभ कर दिया। बेंटिंक ने कई जिलों के ऊपर कमिश्नर नाम का पदाधिकारी नियुक्त किया। न्याय के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण सुधार किया। उसने कार्नवालिस द्वारा किए गए सभी अदालतों को अनुचित समझ कर बंद करवा दिया। आगरे में एक अपील का न्यायालय अदालत का भी। अभी तक न्यायालयों में फारसी फारसी भाषा का प्रयोग होता था जिसे समझने में जनता और जज दोनों को कठिनाई होती थी अतः अब न्यायालयों में प्रान्तीय भाषाओं के प्रयोग की आज्ञा दे दी। 1832 में कानून द्वारा बंगाल में पूरी पद्धति का आरंभ किया गया

(4) शिक्षा-सम्बन्धी सुधार — 1813 चार्टर एक्ट के द्वारा ब्रिटिश उपनिवेशों के निवासियों में विज्ञान की उन्नति के लिए एक लाख रुपये वार्षिक स्वीकृति दी गई। किन्तु यह रुपया प्रति एकत्रित होता रहा और 1833 तक शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं हो सकी। सरकार इस बात पर एकमत नहीं थी कि किस प्रकार

की शिक्षा भारतीयों को देनी चाहिए। लार्ड मैकाले, राम मोहन राय ~~इसे~~ दोनों ~~ही~~ अंग्रेजी और साहित्य के अध्ययन ~~की~~ के समर्थक थे और काफी वाद विवाद के बाद कौंसिल ने यह पास किया कि भविष्य में अंग्रेजी, साहित्य और विज्ञान की शिक्षा भारत में हो। कलकत्ता में एक कॉलेज और आगरे में एक मेडिकल कॉलेज की स्थापना की गयी।

5) सार्वजनिक सुधार — बैंटिंक ने समाज-सुधार के ~~भी~~ अनेक कार्य किए। सिंचाई की योजना को आगे बढ़ाया। 1836 में ऊपरी गंगा नहर की योजना बनाई। रुड़की में सिविल इंजिनियरिंग कॉलेज की स्थापना की गई। कलकत्ता से दिल्ली जाने वाली ग्रैंड ट्रंक रोड की मरम्मत कराई गई। बम्बई से आगरा तक जाने वाली सड़क का निर्माण कार्य शुरु किया गया।

इस प्रकार बैंटिक के सार्वजनिक हित के कार्य भी प्रशंसनीय है। उसने जितनी लोकप्रियता हासिल की उतनी किसी अन्य गवर्नर जनरलों को प्राप्त न हो सकी।

X